8
नागार्जुन
(जन्म : 1911 ई. / मृत्यु : 1998 ई.)

जीवन परिचय –

हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि नागार्जुन का जन्म बिहार राज्य के दरभंगा जिले के सतलखा गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था। आरम्भिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में हुई, फिर अध्ययन के लिए वे बनारस और कोलकाता गए। 1936 में लंका गए और वहीं बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए।

उन्होंने हिन्दी साहित्य में 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की हैं। नागार्जुन ने कविता के साथ–साथ उपन्यास और अन्य गद्य विधाओं में भी लेखन किया है। उनका सम्पूर्ण कृतित्व नागार्जुन रचनावली के सात खण्डों में प्रकाशित है। उनको हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, उत्तरप्रदेश का भारत–भारती पुरस्कार तथा बिहार के राजेन्द्रप्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सामयिक बोध से गहराई तक जुड़े नागार्जुन की आन्दोलनधर्मी कविताओं को व्यापक लोकप्रियता मिली।

कृतियाँ – युगधरा, सतरंगे पंखों वाली, हजार–हजार बाँहों वाली, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा, तालाब की मछलियाँ, ओममंत्र, भूल जाओ पुराने सपने।

पाठ परिचय –

नागार्जुन की कविता 'कल और आज' ग्रीष्म की घोर तपिश भरी दुरूहता के पश्चात् वर्षा ऋतु के सहज और मनभावन आगमन का वर्णन करती है। ग्रीष्म ऋतु के हताश एवं उदास मुख कृषक, धूल स्नान करते पक्षीवृंद, सूखे खेतों का वीराना उजाड़पन और बदरंग आसमान जहाँ एक ओर समाज के सोपान पर छूटे हुए अंतिम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं दूसरी ओर प्रकृतिगत चित्रण की सहजता को भी दर्शाता है। वर्षा ऋतु का आगमन परिवर्तन का संकेत है। वर्षा के आगमन से प्रकृति–रूपी सुकन्या नृत्य करती हुई प्रतीत होती है। प्रकृति के समस्त उपादान भी उसका साथ देते प्रतीत होते हैं। ऋतु चक्र का अत्यन्त सजीव अंकन इस कविता की विशेषता है। ठेठ देशज उपादानों का प्रयोग मुग्धकारी है। भाषा की दृष्टि से नागार्जुन का ठेठ देसी अन्दाज मनोरम है।

'उषा की लाली' कविता में कवि नागार्जुन का प्रकृति प्रेम सहज रूप में मुखरित हुआ है। शिशु रूप में उगते सूर्य की अप्रतिम छटा से कवि का मन अभिभूत हो जाता है तथा उदय होते सूर्य की केसरी आभा जो कि हिमगिरि के स्वर्ण शिखर का आभास दे रही है, से कवि दूर नहीं होना चाहता है।

कल और आज

अभी कल तक
गालियाँ देती तुम्हें,
हताश खेतिहर,
अभी कल तक
धूल में नहाते थे
गोरैयों के झुण्ड,
अभी कल तक
पथराई हुई थी
धनहर खेतों की माटी,
अभी कल तक
धरती की कोख में
दुबके पड़े थे मेढ़क
अभी कल तक
उदास और बदरंग था आसमान !

और आज
ऊपर–ही–ऊपर तन गए हैं
तुम्हारे तंबू,
और आज
छमका रही है पावस रानी
बूँदा–बूँदियों की अपनी पायल,
और आज
चालू हो गई है
झींगुरों की शहनाई अविराम,
और आज
जोरों से कूक पड़े
नाचते थिरकते मोर,

और आज
आ गई वापस जान
दूब की झुलसी शिराओं के अन्दर,
और आज विदा हुआ चुपचाप ग्रीष्म,
समेटकर अपने लाव–लश्कर।

उषा की लाली

उषा की लाली में
अभी से गए निखर
हिमगिरि के कनक–शिखर।

आगे बढ़ा शिशु–रवि
बदली छवि, बदली छवि
देखता रह गया अपलक कवि।

डर था, प्रतिपल
अपरूप यह जादुई आभा
जाए न बिखर, जाए ना बिखर।

उषा की लाली में
भले हो उठे थे निखर
हिमगिरि के कनक शिखर।

कठिन शब्दार्थ

उषा की लाली

हिमगिरि	–	हिमालय
कनक	–	सोना/सोने जैसा
शिखर	–	चोटी
रवि	–	सूरज

कल और आज

खेतिहर	–	किसान
पथराई	–	पत्थर के समान
बदरंग	–	फीका
अविराम	–	लगातार
दूब	–	घास

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ग्रीष्म की धूल में कौन नहाते थे?
   (क) कबूतर (ख) गोरैया (ग) झिंगुर (घ) मेढ़क
2. नागार्जुन हिन्दी के अतिरिक्त और किस भाषा में रचना कर्म करते थे?
   (क) मैथिली (ख) अवधी (ग) बांग्ला (घ) ब्रजभाषा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. 'उषा की लाली' कविता में किस समय का वर्णन हुआ है?
4. खेतों की मिट्टी पथराई हुई क्यों थी?
5. कवि ने आसमान को बदरंग क्यों बताया है?
6. 'उषा की लाली' कविता के अनुसार कवि को क्या डर लग रहा था?
7. कविता 'उषा की लाली' में हिमगिरि किसे कहा गया है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति में कौन–कौन से बदलाव आए हैं?
9. 'उषा की लाली' कविता का शिल्प सौन्दर्य लिखिए?

निबंधात्मक प्रश्न –

10. 'कल और आज' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
11. आप भी अपने जीवन में प्रकृति के अनुपम दृश्यों को देखते होंगे। किन दृश्यों को देखकर आपका हृदय कवि की तरह प्रफुल्लित हो उठता है? अपने शब्दों में लिखिए।
12. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) और आज .... झींगुरों की शहनाई अविराम।
    (ख) डर था, प्रतिफल.......................... हिमगिरि के कनक शिखर।